SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

B.Ed. 1st year

Paper:-EPC-1

Unit:-2

Teacher name-kalpana kumari

Scanned with CamScanner

Page No.
Date 02/06/20

* तुलसीराम द्वारा रचित 'मुर्दहिया' —

Introduction — डॉ० तुलसीराम का जन्म जुलाई 1949 ई० को उत्तरप्रदेश के आजमगढ़ में हुआ था। उनका संबंध दलित समुदाय से था जिसकारण बचपन से ही उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक कठिनाईयों से जुझना पड़ा।

डॉ० तुलसीराम बचपन से ही धनी प्रतिभा के थे तथा बचपन में आनेवाली कठिनाईयों ने उन्हें लेखक बना दिया। अपने लेखन में दलित जीवन के कष्टों, यातनाओं, उपेक्षाओं, प्रताड़ना आदि की खुलकर अभिव्यक्ति की और सामाजिक बंधनों पर जमकर हमला किया। उनके जीवन पर डॉ० भीमराव अम्बेडकर का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता था तथा उनके अचेतन पर महात्मा बुद्ध का गहरा प्रभाव था। अतः अपने लेखन को आत्मकथा के रूप में 'मुर्दहिया' का रचनाकर उन्होंने सा० — सत्तर के दशक में दलितों के जीवन पर प्रकाश डाला है।

* 'मुर्दहिया' (आत्मकथा) —

डॉ० तुलसीराम ने अपनी आत्मकथा में यह बताने का प्रयास किया है कि उस समय कि सामाजिक व्यवस्था में दलितों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा जाता था तथा शिक्षा पर ब्राह्मणों का एक क्षत्रराज था, यदि किसी दलित या नीच जाति के व्यक्ति को स्कूल में दाखिला मिल भी जाता था तो उसे सही गालियों और

Scanned with CamScanner

संघर्षों का सामना करना पड़ता था। अपने आत्मकथा मुर्दहिया के माध्यम से डॉ० तुलसीराम ने अपने जीवन में शिक्षा के लिए किये गये संघर्षों का वर्णन किया है साथ हि तत्तकालीन सामाजिक व्यवस्था में विद्यमान अंधविश्वास, भूत-प्रेत और सामाजिक कुरीतियों को उजागर किया है।

लेखक ने अपने जीवन में शिक्षा के लिए आनेवाली बाधाओं के बावजूद भी गौतमबुद्ध, अब्राहम लिंकन, गांधी जी तथा नेहरू इत्यादि महापुरुषों के बारे में जाना उनके द्वारा किये गये संघर्षों को जाना और सामाजिक परेशानियों का डटकर मुकाबला किया। डॉ० तुलसीराम अपने जीवन में अम्बेडकर और मार्क्स से काफी प्रभावित थे। अतः उन्होंने दलितों के जीवन में किये गये संघर्षों और सामाजिक व्यवस्थाओं का अपने आत्मकथा के माध्यम से व्यक्त किया।

निःसंदेह डॉ० तुलसीराम ने इस आत्मकथा में विरोधि परिस्थितियों में अदम्य जिजीविषा और जीवन संघर्ष की झलक दिखाई है। अतः इस आत्मकथा के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा ऊँच-नीच, गरीब-अमीर सभी जाति वर्ग के लिए अनिवार्य है जो समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वासों को जड़ से मिटाकर एक नया सवेरा लायेगा तथा भारतवर्ष के ग्रामीण व्यवस्था का प्रकाशमय करेगा।

Page No.
Date

* "मुर्दहिया" का अर्थ :-

डॉ० तुलसीराम द्वारा रचित आत्मकथा का शीर्षक मुर्दहिया जिसे सिर्फ एक शीर्षक मात्र नहीं समझा जा सकता है क्योंकि यह कहानी ग्रामीण अवस्था को दर्शाती है जिसमें मुर्दहिया का अर्थ है गाँव का वह कोना जहाँ मुर्दे फूंके जाते हैं तथा मरे हुए जानवरों के चमड़े उतारे जाते हैं और वहीं दलितों की बस्तियाँ थी जिन्हें गाँव में अछूत समझा जाता था। परन्तु उन्हीं बस्तियों से बहुउद्देश्यीय कामों को करने का रास्ता गुजरता था अर्थात चरवाही से लेकर हरवाही, स्कूल या दुकान, बाजार या मंदिर या फिर मजदूरी करने जाने के लिए रेलगाड़ी पकड़ना हो तो सभी को मुर्दहिया से ही होकर गुजरना पड़ता था।

अतः कहा जाये तो मुर्दहिया के कारण ही पूरे धरमपुर गाँव को ही अंधविश्वास भूत-प्रेत, झाड़-फूंक, टोने-टोटके का जरिया समझा जाता था इसलिए डॉ० तुलसीराम ने अपनी आत्मकथा 'मुर्दहिया' के माध्यम से अंधविश्वास और कुरीतियों का पाया जाना अपने ही गाँव में नहीं बल्कि पूरे भारतवर्ष के गाँवों की सामाजिक व्यवस्थाओं का चित्रण किया है।

* शिक्षा :-

इस आत्मकथा ने यह बताने का प्रयास किया है कि लेखक ने अपने जीवन में शिक्षा प्राप्त करने तथा दलित समुदाय में जन्म लेने का कठिन संघर्ष का सामना किया है। दलित बस्तियों को गाँव के दक्षिण भागों में बसाया जाता था तथा

Scanned with CamScanner

उन्हें गाँव के सामाजिक - धार्मिक कार्यों में भाग लेने का कोई अधिकार नहीं था परन्तु इन सभी कुरीतियों के बावजूद भी लेखक ने शिक्षा के माध्यम से इस पर विजय प्राप्त की। अतः शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य है।